JANUARY TO MARCH 2016-17

इंदिरा किसान मितान (जनवरी, फरवरी, मार्च)2017

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	प्याज	भीमा शक्ति	प्याज की उन्नत किस्म का आकलन	0.4	05
2.	बत्तख	व्हाईट पैकिन	बत्तख सह मछली पालन का आकलन	20 नग	04
3.	चना	JAKI- 9218	चने में कॉलरगड के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडर्मा के प्रभाव का आकलन	0.8	04
4.	गेहूँ	सी.जी. -03	सेल्फ प्रोपेल्ड वर्टीकल कनवेयर रिपर द्वारा गेहूँ की कटाई का आकलन	1.0	04
5.	अरहर	आशा	रबी अरहर का आकलन	0.8	04
6.	मछली	रोहू, कतला मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
7.	मुर्गी	कड़कनाथ	बैकयार्ड पद्धति में कड़कनाथ के प्रदर्शन का आकलन	40 नग	04
8.	गाय	देशी	गन्ने के प्रति उत्पाद (अगुआ) का पशु आहार के रूप में आकलन	20	05
योग					

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	टमाटर	अरका रक्षक	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	5
2.	गाय	देशी	बाह्य परजीवी के नियंत्रण हेतु नीम एवं करंज तेल के प्रभाव का प्रदर्शन	24 पशु सं.	12
3.	गाय	देशी	अंतः परजीवी के नियंत्रण हेतु व्यापक श्रेणी की परजीवी नाशक दवाईयों के प्रभाव का प्रदर्शन	24 पशु सं.	12
4.	चना	जे.जी -130	सीडकम फर्टीलाईजर ड्रील द्वारा चना की बुवाई का प्रदर्शन	05	13
5.	गेहूँ	सी.जी. -03	सीडकम फर्टीलाईजर ड्रील द्वारा गेहूँ की बुवाई का प्रदर्शन	05	13
6.	गेहूँ	सी.जी. -03	गेहूँ की उन्नत किस्म का प्रदर्शन चने	05	12
7.	चना	JAKI- 9218	में इल्ली नियंत्रण का समन्वित प्रदर्शन	05	12
8.	चना	जे.जी -130	चना की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
9.	मशरूम	आयस्टर	आयस्टर मशरूम उत्पादन का प्रदर्शन	-	12
10	गन्ना	सी.ओ. 86032	गन्ने में लाल सड़न बीमारी के प्रबंधन हेतु टेबुकोनाजोल 0.1 प्रतिशत से बीज उपचार का प्रदर्शन	05	12
योग					

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	20	50

SEED HUB योजना अंतर्गत बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	प्रजाति	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	प्रमाणित	44	08

LTFE योजना अंतर्गत

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (हे.)	लाभार्थी
1.	चना	JAKI- 9218	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	06	15

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	20	70
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	80	100
प्रक्षेत्र दिवस	03	300
योग	103	470

बीजोत्पादन कार्यक्रम

(कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में रबी 2016 -17 में बीज उत्पादन कार्यक्रम)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	आशा	प्रमाणित	2.0
2.	चना	JAKI- 9218	प्रमाणित	9.0
3.	गन्ना	CO - 86032 COC - 671 CO - 85004 CO - 99004 CO - 94008	आधार	0.4
योग				11.4

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....
.....
.....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-28 | त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी, फरवरी, मार्च 2017 | वर्ष-10

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान अनुप्रयोग संस्थान

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी
श्री बी.एस.परिहार
सस्य विज्ञान
कु.मनीषा खापर्डे
मात्स्यिकी
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक
श्रीमती स्वाती शर्मा
कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agri search with a human touch

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण

माननीय डॉ. एस. के. पाटिल, कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा दिनांक 03 अक्टूबर 2016 का कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण किया गया। माननीय कुलपति ने कृषि विज्ञान केन्द्र के धान के कॉप कैफेटेरिया मे लगी 22 प्रजातियों का अवलोकन किया प्रक्षेत्र में लिये जा रहे सोयाबीन की प्रजातियों पर तकनीकी जो कि, इंदिरा सोया सीड ड्रील द्वारा बुआई किया गया था उसकी सराहना की प्रक्षेत्र में अरहर एवं सोयाबीन की अंतवर्तीय फसलों का अवलोकन भी किया। तदोपरान्त कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रक्षेत्र दिवस मे माननीय कुलपति जी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया एवं किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा उन्नत तकनीकियों से अवगत कराया।

कृषक संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 15.10.2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षण कक्ष में कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें रेड्डी फाउन्डेशन द्वारा सहसपुर लोहारा ब्लाक के कुल 35 कषकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण की शुरूआत कार्यक्रम समन्वयक डॉ0 बी.पी.त्रिपाठी ने किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ जैसे प्रक्षेत्र परीक्षण अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कृषक परीक्षण आदि की विस्तृत जानकारी दी एवं वर्तमान में कबीरधाम जिले में चना उत्पादन की सम्भावनाये की जानकारी प्रदान की।

Livelihood in full Employment (LIFE) योजनान्तर्गत प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा Livelihood in full Employment (LIFE) योजनांतर्गत जिले के 30 कृषक जिन्होने मनरेगा रोजगार गारंटी योजनांतर्गत 100 दिन का रोजगार पूर्ण कर लिया है के लिए 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 17 से 22 अक्टूबर 2016 तक आयोजन किया गया था। प्रशिक्षण में कृषकों को समन्वित कृषि प्रणाली विषय पर सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक व्याख्यान कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मनरेगा अंतर्गत रोजगार पूर्ण कर चुके कृषकों को प्रशिक्षित किया जाना है। ताकि वे समन्वित कृषि प्रणाली के सिद्धांतो का अपनाकर कृषि को अपना रोजगार बना सकें। कार्यक्रम के अंत में कृषकों को छह दिवसीय प्रशिक्षण हेतु प्रमाण पत्र वितरीत किया गया।

National Fisheries Development Board (NFDB) योजनान्तर्गत प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एव राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में 05 दिवसीय प्रशिक्षण समन्वित मछली पालन के विषय पर ग्राम पनेका में आयोजित किया गया। जिसमें 20 प्रशिक्षार्णी ने भाग लिया। प्रशिक्षण का शुभारंभ दिनांक 19 दिसंबर 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में मुख्य अतिथि डॉ. एस. आर. के. सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक, अटारी जोन -7 जबलपुर (म.प्र.) द्वारा किया गया। उन्होनें समन्वित मछली पालन के उद्देश्य एवं मछली पालन में संभावनाएं तथा मछली के साथ अन्य इकाई के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा मत्स्य कृषकों से मिलकर उनकी समस्या सुनकर समाधान भी बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहें श्री वाई. के. डिंडोरे सहायक संचालक, मछली पालन, जिला - कबीरधाम ने प्रदेश में मछली पालन की संभावनाएं एवं समन्वित मछली पालन के लाभ तथा मोनोसेक्स तिलपिया मछली की जानकारी एवं ताल के बारे में बताया साथ ही साथ मछली सह सुकर पालन की संभावनाओं से भी अवगत कराया।

JANUARY TO MARCH 2016-17

इंदिरा किसान मितान (जनवरी, फरवरी, मार्च)2017

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

राष्ट्रीय दलहन एवं तिलहन मिशन योजनांतर्गत ग्राम कामठी विकासखण्ड बोड़ला में दिनांक 28 नवंबर 2016 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें समूह प्रदर्शन के अंतर्गत लगभग 50 कृषकों को अरहर का बीज 50 एकड़ अरहर की किस्म एल.आर.जी. 41 वितरित किया गया था। कार्यक्रम के प्रभारी इंजी. टी. एस. सोनवानी ने कृषकों को दलहन फसलों की इस किस्म की उत्पादन क्षमता एवं गुणों के बारे में बताया गया

स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा स्वच्छ भारत अभियान अंतर्गत दिनांक 16 से 31 अक्टूबर 2016 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 16 से 31 अक्टूबर तक कबीरधाम जिले के अलग- अलग गांव मे विभिन्न कार्यक्रम जैसे कृषक प्रशिक्षण, रैली के माध्यम से कृषकों को पर्यावरण को स्वच्छ रखने, पीने के पानी के स्त्रोत के आसपास की स्वच्छता एवं पक्के शौचालय, पालीथीन का कम से कम उपयोग करना एवं कचरे निपटने की ठोस व्यवस्था आदि के बारे में जागरूक किया गया एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा गांव मे साफ सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया गया।

संविधान दिवस मनाया गया

भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने में भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की तथा आधुनिकतम भारत के निर्माण में योगदान किया, जिसका सम्मान करते हुए 26 नवंबर को "संविधान दिवस के रूप में मनाया गया। इसी तारतम्य में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा प्रक्षेत्र नेवारी में दिनांक 26 नवंबर 2016 को संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय संविधान के 'प्रस्तावना का सभी अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा सामूहिक पाठन किया गया तथा साथ ही बेमेतरा जिले से आए छात्र-छात्राओं के मध्य जागरूकता फैलाया गया जिससे आम जनता के बीच भारतीय नागरिकों के संवैधानिक अधिकारो एवं दायित्वों का संदेश पहुंचाया जा सके।

जय किसान जय विज्ञान सप्ताह मनाया गया

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 23.12.2016 से 29.12.2016 को जय किसान जय विज्ञान सप्ताह मनाया गया। जिसके अंर्तगत कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा दिनांक 23.12.2016 को ग्राम पनेका, दिनांक 26.12.2016 को ग्राम घोघराकला ब्लाक – पण्डरिया एवं 29.12.2016 को कर्मचारी भवन कवर्धा मे कृषक प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रक्षेत्र में लगे गेहूँ की क्राप केफेटेरिया

मलचिंग द्वारा सब्जी उत्पादन

मछली सह बत्तख पालन

सामयिक सलाह -2017

क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

जनवरी

फसलोत्पादन एवँ पौधा संरक्षण

- समय से बोये गेहूँ में 20-25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, किरीट जड़ अवस्था में नत्रजन डालें, एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- गन्ने की बुआई का कार्य पूर्ण करें।
- गन्ने की बुआई के समय बीजोपचार (टेबुकोनाजोल 0.01 प्रतिशत) को हिसाब से करें।
- चने में हल्की सिंचाई करें।
- चने में इल्ली नियत्रण हेतु ट्राइजाफास 350 मि.ली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
- चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें, कटुआ इल्ली के प्रकोप से रक्षा करें एवं असिंचित अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया घोल कीटनाशक के साथ ही छिड़काव करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल बढ़वार पर होती है अतः सिंचाई करना आवश्यक है।
- शीतकालीन गन्ने में नत्रजनयुक्त उर्वरक (यूरिया) का एक चौथाई भाग दें, पकी हुई फसल की कटाई कर कारखाना अथवा आजार भिजवाने की व्यवस्था करें, गुड़ बनाने का कार्य करें।

उद्यानिकी

- प्याज की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा देकर सिंचाई करें।
- प्याज में बैंगनी धब्बा रोग से बचाव के लिए ब्लाईटाक्स-50 या डायथेन एम-45 नामक दवा का छिड़काव रोगर कीटनाशक दवा के साथ करें।
- मिर्च में फल गलन के नियंत्रण हेतु ब्लाईटाक्स 50 का छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में अच्छी फल के लिए लकड़ी लगाकर सहारा दें।
- आम के वृक्ष में चेपा कीट की रोकथाम के लिए ग्रीस का लेप मुख्य तनों पर जमीन से 1 मीटर की ऊँचाई तक करें।
- सब्जी फसलों में चूर्णी फफूंदी रोग से बचाव के लिए 0.1 प्रतिशत बाविस्टीन घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतराल से दो बार करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को लगाने हेतु बीज को प्लास्टिक की थैली में लगाकर पॉलीहाऊस में रखें जिससे अंकुरण शीघ्र होगा।
- जनवरी माह में टमाटर के पौधों को रोपने से अप्रैल माह में फल मिलना शुरु हो जाता है जबकि इस समय बाजार में टमाटर की आवक कम रहती है जिससे बाजार मूल्य अधिक मिलेगा।

पशुपालन

- पशुओं को पेट के कीड़ो की दवाई नियमित दें।
- दुधारु पशु के थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं का बिछावन समय-समय पर बदलवाते रहें।
- अधिक बरसीम खिलाने से पशु को अफरा हो सकता है, अफरा होने पर 500 ग्राम सरसों के तेल में 60 ग्राम तारपीन का तेल मिला कर दें।
- पशु के सम्पूर्ण विकास के लिए खनिज मिश्रण 50-60 ग्राम दें।

फरवरी

फसलोत्पादन एवँ पौधा संरक्षण

- गन्ने की बुवाई उपरांत गुड़ाई के समय कारटाफ हाइड्रोक्लोर 4 जी 7 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नालियो मे छिड़काव करें।
- गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवारनाशी ऐट्राजीन का छिड़काव करें।
- शीतकालीन गन्ने में निंदाई, गुड़ाई करें तथा फोरेट 10 जी दवा को कूड़ो में डालकर सिंचाई करें।
- वसंतकालीन गन्ने की उन्नत किस्म का चुनाव कर बीजोपचार कर लें, खेतों में नाली बनाकर खाद एवं उर्वरक डालें, गन्ने के दो से तीन आंखों वाले टुकड़े लगायें।
- मूंग, मक्का, उड़द, सूर्यमुखी, मूंगफली, तिल, लोबिया एवं चारा फसलों की बुआई करें।
- गेहूँ एवं अन्य रबी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, असिंचित अवस्था में 2-3 प्रतिशत यूरिया घोल का छिड़काव करें।
- बरसीम, जई, लूसर्न, मक्का आदि चारा फसलों में सिंचाई व अवस्थानुसार कटाई करें।
- जनवरी में बोई गई फसलों में सिंचाई व गुड़ाई करते रहें।
- तिवड़ा, मटर, चना की कटाई करें।

उद्यानिकी

- फलदार वृक्षों जैसे आम, आंवला, चीकू, कटहल आदि में फूल एवं फल आते समय सिंचाई बंद रखें।
- नये लगाये गये आम, अमरुद, आंवला, कटहल, चीकू, नींबू आदि पौधों में सिंचाई करें।
- आम का फुदका कीट एवं चूर्णी फफूंदी से बचाव के लिए कार्बोरिल डस्ट 2 ग्राम और सल्फेक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फरवरी माह में केला एवं पपीता लगाने की तैयारी करें, गोभीवर्गीय फसल में 750 मि.ली. मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. दवा छिड़के।
- आलू की फसल खुदाई के पहले सिंचाई बंद कर देवें और जमीन से ऊपर पौधो की कटाई कर दें, इससे आलू के कंद पुष्ट होगें।
- अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों की बोआई एवं पहले से तैयार पौधों की रोपाई करें, भिण्डी की बोआई करें, धानिया एवं सौंफ की फसल में चूर्णी फफूंद से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
- ग्रीष्म काल के प्रारंभ में फूल प्राप्त करने के लिए गेंदे की बुआई करें, रजनीगंधा में खाद एवं उर्वरक दें, घीक्वांर (एलोवेरा) के नये पौधो निकालकर बेचें, मेन्था के सकर्स नर्सरी में लगायें, सफेद मूसली की कंद की खुदाई कर छोयें तथा छीलकर सुखायें।
- इस माह भिण्डी, मिर्च तथा खीरे की बुआई करें।
- केला पपीता लगाने की तैयारी करें।

पशुपालन

- गाय व भैंस के गर्मी में आने पर उत्तम नस्ल के सांड से समय पर गाभिन करवायें।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें।
- नवजात बछड़े - बछड़ियों को अन्य परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- दुधारु पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुठ्ठी बांध (फुल मिल्डिंग) कर निकालें।
- बरसीम व राई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिये कटाई करते रहें।

मार्च

फसलोत्पादन एवँ पौधा संरक्षण

- चना, अलसी, तिवड़ा, मटर, राजमा, मसूर एवं सरसों इत्यादि फसलों की कटाई कर ग्रीष्मकालीन फसलों हेतु खेत की तैयारी करें।
- चना कटाई उपरांत उचित भण्डारण करें।
- गन्ने की बुआई बीजोपचार के बाद करें।
- गन्ने की शरदकालीन फसल में हल्की मिटट्री चढ़ायें तथा सिंचाई करते रहें अग्र तना छेदक कीट प्रकोप से फसल बचाने हेतु फोरेट 10 जी, या कार्बोफ्यूरान 3 जी दानेदार दवा का प्रयोग करें।
- गन्ने की पेड़ी फसल में उर्वरक व सिंचाई दें, तथा कीट प्रकोप होने पर कीटनाशक का प्रयोग करें।
- देर से बोये गये गेहूँ में अंतिम सिंचाई दुग्धावस्था पर करें।
- ग्रीष्म कालीन फसलों में गुड़ाई व सिंचाई 10-15 दिन के अंतर से करें।
- चारे की फसलों की बुवाई करें।

उद्यानिकी

- आम, चीकू में फल विकसित होने का समय है अतः इन वृक्षों में 8-10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- आम में फल झड़ने को रोकने के लिए एन.ए.ए. 20-25 मिग्रा. प्रति लीटर पानी या प्लेनोफिक्स 2 मिली. तथा केराथेन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर रसे 15-15 दिन में छिड़काव करें।
- कटहल में फल गलन से बचाव हेतु डायथेन एम-45 या जिंक कार्बामेट 0.025 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को कीड़ो से बचाव हेतु विश प्रपंच का प्रयोग करें या कार्बोरिल डस्ट का भुरकाव करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिण्डी आदि फसलों में निदाई-गुड़ाई कर सिंचाई करें।
- प्याज की तैयारी फसल की खुदाई से 10-15 दिन पहले पानी देना बंद कर दें एवं पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दें।
- प्रारंभ में गेंदा के तैयार पौधा की खेत में रोपाई करें, ग्लैडियोलाई कंद की खुदाई कर ठंडे स्थानों पर भंडारण करें।
- नर्सरी में तैयार मेंथा पौधा की रोपाई करें,बच के प्रकंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- पत्तियां पीली पड़ने पर कंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- नीबू वर्गीय फलो को गिरने से बचाने के लिए 2,4 डी 10 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव फलो की आरंभिक अवस्था में करें।
- पपीते की नई फसल लगाने का प्रबंध करें।
- लेमन घास की फसल में गोबर घोल का छिड़काव करें।

पशुपालन

- ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50-60 ग्राम प्रतिदिन दें।
- पशु ब्याने के 1-2 घंटे के अंदर नवजात बछड़े - बछड़ियों को खीस अवश्य पिलायें।
- नवजात शछड़े- बछड़ियों को 10-15 दिन की आयु पर सींगरहित करवायें।
- पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीके समय-समय पर अवश्य लगवाएं।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवं मक्का की बिजाई करें।